

-: सहज कृषि तकनीक :-

(जैसा खाओगे अन्न वैसा रहेगा मन)

चैतन्य लहरियों का प्रभाव मानव शरीर के उत्थान के साथ-साथ सभी जीवन्त चीजों पर क्रमशः पृथ्वी, पानी, वनस्पति, वातावरण पर कार्य करता है। जिसे हम सहज कृषि, बागवानी, पशुपालन, मधुमक्खी, पालन, मुर्गीपालन, मशरूम, मछली पालन, टिश्यूकल्चर खाद्यान्न, फल, सब्जी, मसाले, औषधीय, फूलों की खेती इत्यादि में अपनाकर अधिक गुणवत्ता उत्पादन लेकर अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर खुशहाल हो सकते हैं। किसान भाईयों को सहज कृषि की विधियाँ समझाई जा रही है जो बहुत आसान व सरल है।

- 1- कृषक सहजयोगी हो नियमित ध्यान धारण करता हो एवं सामूहिकता में कार्य करना आवश्यक है।
- 2- कृषक सहज कृषि के प्रभाव को जानने के लिए एक खेत में चैतन्यमय बीज व पानी का उपयोग करें तथा दूसरे खेत में कृषक द्वारा अपनाई जा रही विधि, खाद, दवा का उपयोग कर मूल्यांकन करें।
- 3- सर्वप्रथम श्री माताजी निर्मला देवी के फोटों के समक्ष बीज जो आप बोना चाहते हैं, (अनाज, दलहन, तिलहन, फल, फूल, सब्जी के बीज, पौध, धान, कटिंग गुलाब, गन्ना के टुकड़े एवं अन्य जीवन्त सामग्री) रखें, साथ ही एक पात्र (बाल्टी) में पानी प्रातः/ सांय को रखें दूसरे दिन चैतन्यमय पानी को जहाँ आप बीज बो रहे थे, हाथ से छिड़के या फिर स्प्रेअर में भरकर भी छिड़क सकते हैं। पलेवा करते समय चैतन्यमय पानी को मटके में भरके उसमें छोटा-सा छेद कर पानी की नाली (धौरा) पर रखकर टपका-टपका कर पूरे खेत में पहुँचाये, बाद में चैतन्यमय बीज की बुवाई करें, ध्यान रहे कि प्रत्येक सिंचाई में श्री माताजी का चैतन्यमय पानी का उपयोग करें।
- 4- खेत की नकरात्मकता समाप्त करने के लिए खेत के चारों तरफ पानी का नारियल गणेश अर्थवाशीष बोलते हुए स्थापित करें या कपूर हवन करते हुए 24 मंत्र श्रीमाताजी के या सहजयोगी/योगिनी का सामूहिक ध्यान धारणा कर श्रीमाताजी से प्रार्थना करना या खेत में सामूहिक हवन। (तीन नारियल लाकर चैतन्यमय कर गाड दे नकरात्मकता समाप्त हो जावेगी। 1979-योग भूमि कैसट)
- 5- पानी एवं फसल को दोनों हाथ आगे हुए सामूहिक चैतन्य प्रवाहित करना, शाकम्भरी या ऋतुम्भरा मंत्र का जाप करते हुए फसल या जीवन्त चीजों पर चैतन्य देना।
- 6- परमपूज्य श्रीमाताजी से प्रार्थना करना कि यह खेत, फसल आपकी है आप ही कर्ता है आप ही भोक्ता है कृपया मेरी खेती को अच्छा कर दीजिए।